सीखना जीवन भर

प्रेमा रंगाचारी

"शिक्षा से मेरा आशय समग्र रूप से उसे प्रकट करना है जो बच्चे और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा में सर्वश्रेष्ठ होता है।" *– महात्मा गाँधी*

सार्वभौमिक प्रारम्भिक शिक्षा के लिए सरकार के प्रमुख कार्यक्रम, सर्व शिक्षा अभियान, को तमिलनाडु के 13 जिलों में लागू किया गया है। इसकी बच्चों पर केन्द्रित तथा गतिविधि–आधारित सीखने की प्रक्रिया ने प्रारम्भिक शिक्षा की पहुँच में विस्तार किया है और उसकी गुणवत्ता को बढ़ाया है। इससे मिलता–जुलता कार्यक्रम माध्यमिक स्कूलों में आरम्भ किया गया है, जो रचनावाद और स्व–निर्देशित सीखने पर आधारित है।

सरकार का दृष्टिकोण सदैव ऊपर से नीचे की ओर रहता है। वह हमेशा बच्चों की जरूरतों और वे जिस समुदाय से आते हैं उसकी जरूरतों को ध्यान में नहीं रखता।

पर क्या नीचे से ऊपर की ओर बढ़ने वाला दृष्टिकोण काम करता है? हाँ, वह कारगर होता है, जैसा कि कोयम्बटूर जिले के अनैकट्टी में इरुला समुदाय के बच्चों की सेवा करने वाले विद्या वनम् की शिक्षण पद्धति से प्रकट होता है। यह दृष्टिकोण सीखने की प्रक्रिया को समुदाय के व्यापक पारिस्थितिक तंत्र के साथ अविभाज्य रूप से जोड़ता है।

स्कूली शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य बच्चों को ऐसे दृष्टिकोण और कौशल सीखने की सुविधा देना है जो उन्हें सफलतापूर्वक अपने परिवेश के साथ काम करने दें। एक आदिवासी व्यक्ति का जीवन पूरी तरह से उसके पर्यावरण से जुड़ा रहता है, इसलिए हमें वहाँ ऐसी शिक्षण पद्धति की जरूरत थी जो उनकी सांस्कृतिक जरूरतों के प्रति संवेदनशील हो, और जो विभिन्न बच्चों की परम्पराओं तथा उनकी सीखने की शैलियों के प्रति जागरूक हो।

सीखने की समस्याएँ तब खड़ी होती हैं जब बच्चों का पर्यावरण और सांस्कृतिक परिवेश वह नहीं होता जो शिक्षक का होता है। आमतौर पर सभी शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों में एक जैसी सामग्री होती है, जिसका उपयोग उसमें बिना कोई परिवर्तन किए, शहरी तथा ग्रामीण, दोनों ही परिवेशों में किया जाता है। शिक्षण पद्धति को सिर्फ एक वैज्ञानिक उपकरण की तरह नहीं, बल्कि एक ऐसी प्रक्रिया की तरह देखा जाना चाहिए जिसमें सीखने को एक सांस्कृतिक जाल पर बुना जाता है। उसमें विभिन्न सांस्कृतिक सन्दर्भों तथा कक्षा में और कक्षा के बाहर सीखने और सिखाने के व्यवहारों को भी समाहित किया जाना चाहिए।

शिक्षा एक जैविक तथा मानवीय, दोनों ही प्रकार की व्यवस्था है; वह लोगों के बारे में और उनके लिए होती है। मनुष्य नैसर्गिक रूप से भिन्न और विविध प्रकार के होते हैं। वे ऐसे व्यापक पाठ्यक्रम में ही पनपते हैं जो उस विविधता को सराहता है और विभिन्न प्रकार की प्रतिभाओं को मान्यता देता है। एक ऐसा पाठ्यक्रम जो विज्ञान और गणित पर तो जोर देता ही है, पर साथ ही कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए और सीखने की अलग–अलग शैलियों के लिए भी भरपूर सुविधा देता है। इसलिए पाठ्यक्रम बनाने में शिक्षा की वर्तमान कार्यप्रणाली के बारे में फिर से सोचे जाने तथा ऐसी नई व्यवस्थाएँ निर्मित करने की जरूरत है जो मस्तिष्क, हृदय और हाथों को समाहित करती हों।

स्कूल के प्रारम्भिक वर्षों में प्रमुख रूप से बच्चों के आत्मविश्वास और स्वयं सीखने के कौशलों को निर्मित करने पर ध्यान केन्द्रित रहना चाहिए। यह जरूरी नहीं है कि विभिन्न विषयों के भेद बच्चों को समझ में आएँ। सार्थक सीखना ऐसी योग्यता के साथ आता है जो ज्ञान को एक ऐसी अन्तर्सम्बन्धित संरचना के रूप में समझ सके जिसमें एक चीज सहजता से दूसरी से जुड़कर एक सुसंगठित पूर्णता को निर्मित करती है। इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए, विद्या वनम ने 'विषयसूत्र (थीम) आधारित सीखने' की पद्धति विकसित की।

विषयसूत्र–आधारित सीखना

इसमें किसी ऐसे विषयसूत्र को चुनना होता है जिसकी खोजबीन बच्चे के विकास के भिन्न–भिन्न स्तरों पर की जा सके। बच्चों को छोटे–छोटे समूहों में बाँट दिया जाता हैं और उन्हें अपने समूह के साथ करने के लिए कार्य दिए जाते हैं। वह विषयसूत्र ऐसा छत्र होता है जिसके अन्तर्गत अलग–अलग विषयों का अध्ययन किया जाता है और उन्हें एक–दूसरे से इस तरह जोड़ दिया जाता है कि वे मिलकर एक अखण्ड इकाई बन जाते हैं। वह सीखने के विभिन्न स्तरों को भी समाहित करता है और हर समूह को सक्रिय रूप से सीखने के लिए नई चुनौतियाँ पेश करता है। यह प्रक्रिया बहुत हद तक यह बात फिर साबित करती है कि ज्ञान अलग–अलग, स्वतंत्र खण्डों में बँटा हुआ नहीं होता, बल्कि वह एक पूर्ण इकाई की तरह अखण्ड होता है। सीखने के ये विविध आयाम उस पारिस्थितिक तंत्र तथा उस सांस्कृतिक परिवेश के बोध को और गहराई देते हैं जिनके वे हिस्से होते हैं।

विषयसूत्र–आधारित इकाइयाँ किसी विषय को केन्द्र में रखते हुए पाठ्यक्रम के क्षेत्रों को उससे और आपस में संयोजित करने के माध्यम से बच्चों को विविध प्रकार के कौशल और विषयवस्तु पढ़ाने में मदद करती हैं। यह बच्चों की रुचियों के अनुरूप होने के कारण उनमें एक सार्थक उद्देश्य का भाव और कक्षा में समुदाय की भावना निर्मित करता है। ज्यादा जानने की इच्छा से पूछताछ करने और संवाद करने की प्रक्रियाएँ सहज रूप से होने लगती हैं, जिसका परिणाम उनकी उत्साहपूर्ण भागीदारी होती है। समेकित अध्ययन की यह कार्यपद्धति, जो सीखने वालों की सहभागिता पर आधारित रहती है, कुछ शिक्षकों के लिए एक नया संगठनात्मक प्रतिरूप होता है। जो शिक्षक ज्यादा पारम्परिक प्रतिरूप के आदी होते हैं, उन्हें इससे खतरा महसूस हो सकता है, क्योंकि इसमें पाठ्यक्रम की विषयवस्तु के ऊपर शिक्षक का नियंत्रण नहीं रह जाता। ऐसे सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक अब एक भागीदार बन जाता है।

इस प्रकार, शिक्षक एक संयोजक या सहायक बन जाता है। कई शिक्षकों की अपनी पाठ योजनाएँ होती हैं, लेकिन वे लचीला रुख अपनाते हैं और विद्यार्थियों को उनकी रुचि के अनुसार पाठ्य इकाई को अप्रत्याशित दिशाओं में ले जाने की छूट देते हैं। हालाँकि यह विद्यार्थियों को उन विषय इकाइयों में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर देता है जिनका वे अध्ययन करते हैं, परन्तु इससे शिक्षक की भूमिका कम नहीं हो जाती। युवा लोगों को अपने सीखे हुए ज्ञान पर विचार करने और जो वे पहले जानते थे उसका सम्बन्ध नए सीखे से जोड़ने के लिए शिक्षकों की सहायता की जरूरत पड़ती है। कौशलों को हासिल करने की प्रक्रिया को भी नियोजित करने की आवश्यकता होती है। उन कौशलों को अन्य स्थितियों में इस्तेमाल करने की सम्भावनाओं को उदाहरणों सहित दर्शाए जाने की जरूरत होती है।

शिक्षकों के लिए एक श्रेष्ठ रणनीति किसी सहकर्मी के साथ विषयसूत्रों पर आधारित इकाइयों की योजना बनाना है। आपस में विचारों का आदान–प्रदान, गतिविधियों के बारे में सोचना, संसाधनों को विकसित करना, गतिविधियों की योजना बनाना, ये सब दोनों शिक्षकों के कौशलों की पुष्टि करते हैं और एक–दूसरे के विशेष ज्ञान का लाभ उठाते हुए, उन्हें कुछ ऐसा निर्मित करने का अवसर प्रदान करते हैं जिसे वे अकेले–अकेले नहीं कर सकते थे।

विद्या वनम् पूरे स्कूल को शामिल करने वाले ऐसे विषयसूत्रों पर आधारित अध्ययनों की योजना बनाता है, जो बहु–आयु वर्गों के समूहों के लिए होते हैं। इन समूहों को, विद्यार्थियों को उनकी कक्षाओं के आधार पर समूहों में बाँटने के सामान्य प्रचलन से हटकर, पूरे विद्यार्थी समुदाय को अलग तरीकों से संयोजित करके बनाया जाता है। इनका ढाँचा और कार्य–अवधि, संसाधनों की उपलब्धता और लक्ष्यों के अनुसार बदलते रहते हैं। इसका एक फायदा यह है कि जब शिक्षक सहभागिता की प्रक्रिया के माध्यम से साथ काम करते हैं तो वे विचारों के पारस्परिक आदान–प्रदान से लाभान्वित होते हैं। इसके साथ ही, जब शिक्षकों तथा भिन्न–भिन्न कक्षाओं के विद्यार्थियों का आपस में परिचय होता है, विद्यार्थी भिन्न आयु वाले दूसरे विद्यार्थियों के साथ काम करते हैं, तो पूरे स्कूल के एक समुदाय होने की भावना प्रगाढ़ होती है।

शिक्षकों और विद्यार्थियों के द्वारा मिलकर विषयसूत्रों पर आधारित अध्ययनों के विकसित किए जाने के और भी लाभ हैं। विद्यार्थी उनके लिए नए कल्पनाशील विचार, संसाधन और रणनीतियाँ लाते हैं और सीखने की प्रक्रिया के प्रति समर्पित रहते हैं क्योंकि वह उनकी अपनी रुचियों से प्रेरित होती है। सीखना तब अधिक अर्थपूर्ण हो जाता है जब सीखने वाले खुद अध्ययन के अपने विषय और विधियाँ चुनते हैं; और

इस तरह स्कूल के परिवेश में आजीवन सीखने का प्रतिरूप काम करने लगता है। जब शिक्षक अपनी आधिकारिक सत्ता को परे रख देते हैं तो उनके तथा विद्यार्थियों के पारस्परिक व्यक्तिगत सम्बन्ध बेहतर बनते हैं। शिक्षक व्याख्याताओं के बजाय सहयोगी और मार्गदर्शक बन जाते हैं।

निश्चित रूप से, विद्यार्थियों के आचरण पर अन्तिम नियंत्रण शिक्षक का ही रहता है और वही यह सुनिश्चित करने के लिए जवाबदेह होता है कि वे ऐसी सार्थक परियोजनाओं में संलग्न हों जो उनके कौशलों का विस्तार करती हों और जिनका परिणाम उनके ज्ञान में वृद्धि और सकारात्मक दृष्टिकोणों का विकसित होना हो। विद्यार्थियों के द्वारा निर्देशित सीखने की प्रक्रिया का मतलब शिक्षकों का उनकी जिम्मेदारी से हटना नहीं है, बल्कि उसे विद्यार्थियों के साथ साझा करना है।

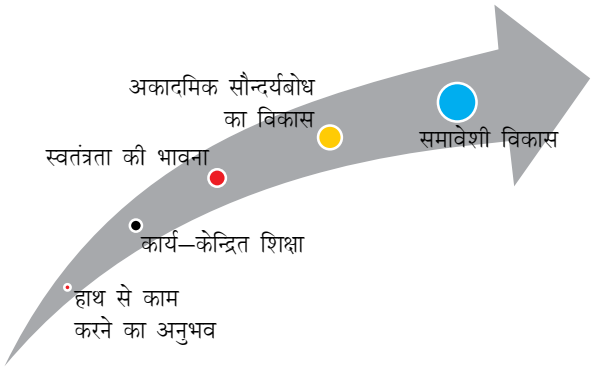

1. विषयसूत्र (थीम) चुनना

पहला काम एक ऐसे विषयसूत्र (थीम) पर चर्चा करना और उसे परिभाषित करना है जो अध्ययन की एक इकाई का आधार बनेगा। उस विषयसूत्र से सम्बन्धित लक्ष्यों (अर्थात, जो जरूरी नहीं कि पाठ्यक्रम के दायरों में ही आते हों) के बारे में योजना बनाने वाले पूरे दल को सहमत होना चाहिए।

2. पहले से योजना बनाना

चुने गए विषयसूत्र को केन्द्र में रखते हुए एक व्यावहारिक योजना बनाएँ। तय करें कि पाठ्यक्रम के किन खास क्षेत्रों की योजना कौन बनाएगा और योजनाओं को पूरी तरह तैयार करने के लिए एक तारीख निर्धारित करें। पूरी अध्ययन इकाई को इकट्ठी तैयार करें और यह सुनिश्चित करें कि उसके खास लक्ष्य पूरे हो जाएँ। आपके पढ़ाना आरम्भ करने से पहले जो कार्य पूरे हो जाना चाहिए उनमें ये शामिल होंगे :

- (पाठ्यक्रम के क्षेत्रों के लिए) लक्ष्यों को निर्धारित करना
- मूल्यांकन की रणनीतियाँ तय करना
- योजना बनाने की जिम्मेदारियों को बाँटना
- योजना बनाने का काम पूरा करने की अन्तिम तिथि तय करना
- संसाधनों को इकट्ठा करना या उनके उपलब्ध होने के स्थान पता करना
- गतिविधियों की योजना बनाना : एक प्रारम्भिक गतिविधि, पूरी कक्षा के लिए गतिविधियाँ, छोटे समूहों के लिए गतिविधियाँ, व्यक्तिगत परियोजनाओं या दिए गए कार्यों के लिए गतिविधियाँ और सत्र के अन्त में एक आखिरी गतिविधि
- सहयोग प्राप्त करने के लिए समुदाय से सम्पर्क और अनुरोध करना
- साप्ताहिक योजना की रूपरेखाओं का उपयोग करते हुए पूरी अध्ययन इकाई को समाहित करना

3. योजना का क्रियान्वयन करना

विषयसूत्र को प्रस्तुत करना। आपको इसमें लचीला रुख अपनाना होगा, क्योंकि विद्यार्थियों के विचार और उनकी रुचियाँ आपको अप्रत्याशित दिशाओं में ले जा सकती हैं। जैसे–जैसे अध्ययन इकाई आगे बढ़ती है, तो प्रेरणा और सहयोग प्राप्त करने के लिए योजना बनाने वाले दल के साथ विचार–विमर्श करना जारी रखें और योजना को स्थिति के अनुसार संशोधित करें।

4. मूल्यांकन करना

विद्यार्थियों की प्रगति का चरण 2 में तय किए गए लक्ष्यों को प्रतिबिम्बित करने वाले उपकरणों से मूल्यांकन करें। जब आपने गतिविधियों को पूरा कर लिया हो, तो अध्ययन इकाई की सफलता का मूल्यांकन करें। उसकी जानकारी को अन्य कक्षाओं, माता–पिताओं तथा समुदाय के समूहों के साथ साझा करें। अपनी उपलब्धियों का उल्लास मनाएँ।

उदाहरण

विषयसूत्र : मिट्टी

बच्चों को मिट्टी के साथ खेलना बहुत अच्छा लगता है और इसकी सहज सुलभता इसे एक रोचक विषय बनाती है। इसे अध्ययन के एक विषयसूत्र की तरह लेने से उसमें अपने–आप विज्ञान, सामाजिक विज्ञान विषयों, गणित और भाषाओं का विस्तृत अध्ययन शामिल हो जाता है।

हमने शुरुआत मिट्टी के बरतन के प्रतीक से की। मिट्टी के बरतन बनाने की कला इस विषयसूत्र के अध्ययन का एक क्रियाशील परिणाम था। मिट्टी का बरतन पाँच मूल तत्वों का भी प्रतीक होता है : मिट्टी (पृथ्वी) को पानी के साथ मिलाकर चिकनी गूँथी हुई लोई बनाते हैं जिसे बर्तन का आकार देकर भट्टी (अग्नि) में पकाया जाता है और फिर उसमें हवा रहती है और वह आकाश में अवस्थित होता है।

इसके बाद हमने मिट्टी में पाए जाने वाले प्राणियों का अध्ययन किया। फिर हम पौधों और पशुओं के संसार में चले गए जिसमें मनुष्य भी शामिल है। यह पूरा चक्र परिस्थिति–विज्ञान, पर्यावरण तथा प्रदूषण तथा अन्त में फिर से मिट्टी को परस्पर जोड़ देता है।

बहु–विषयी कार्यपद्धति

विज्ञान : मिट्टी की विशेषताएँ (रंग, उसके स्पर्श की अनुभूति), उसमें निहित पोषक तत्व और उपजाऊ क्षमता, मिट्टी बनने की प्रक्रिया, विभिन्न प्रकार की मिट्टियों के निर्माण के कारक जैसे कि जलवायु, बारिश की मात्रा, पानी आदि।

गणित : विभिन्न आकार, क्षेत्रफल और परिमाप, पोषक तत्वों के अनुपात को समझने के लिए भिन्नों का ज्ञान, आयतन और भार जैसी चीजों का मापन।

सामाजिक विज्ञान : पारिस्थितिक तंत्र, वनस्पतियाँ और वन्य जीवन, जमीन के प्रमुख स्वरूप, पर्यावरण संरक्षण, वायुमण्डल, पृथ्वी की सतह की आकृति, पुरातत्व।

ललित कलाएँ : चित्रकला, बरतन बनाने की कला, प्रतिरूप गढ़ना, भित्तिचित्र, मूर्तिकला।

भाषा : कहानियाँ, साहित्य, लेख, कविताएँ, नारे, वाद–विवाद।

विषयसूत्र–आधारित सीखना बच्चों को उनके द्वारा जिए गए यथार्थ की बेहतर समझ प्रदान करने में और हासिल किए गए विज्ञान का उपयोग करने में सहायता करता है। शिक्षण पद्धति की यह अवधारणा शिक्षकों के संकल्प, समर्पण और संसाधनों की व्यवस्था करने की क्षमता की परीक्षा लेती है। इसके लिए संवेदनशील शिक्षकों की जरूरत होती है, जिन्हें लोकतांत्रिक ढंग से सीखने–सिखाने की इस प्रक्रिया के बारे में माता–पिताओं और समुदाय को भी शिक्षित करना पड़ता है।

प्रेमा रंगाचारी तमिलनाडु के अनैकट्टी में भुवन फाउण्डेशन के द्वारा आदिवासी और विपन्न बच्चों के लिए चलाए जा रहे स्कूल, विद्या वनम् की प्रमुख सलाहकार हैं। उनसे premarangachary@yahoo.co.in पर सम्पर्क किया जा सकता है।